मैयारुल मज़ाहिब
(धर्मों का मापदण्ड)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

मैयारुल मज़ाहिब
(धर्मों का मापदण्ड)
स्वाभाविक मापडण्ड से धर्मों का मुक़ाबला

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: मैयारुल मज़ाहिब
Name of book	: Ma'iyarul Mazahib
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mauud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Type, Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) July 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

मैयारुल मज़ाहिब

(धर्मों का मापदण्ड)

इस छोटी सी पुस्तिका में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वाभाविक मापदण्ड की दृष्टि से विभिन्न धर्मों की तुलना की है। विशेष तौर पर आर्य धर्म, ईसाई धर्म तथा इस्लाम की ख़ुदा तआला के बारे में शिक्षा की तुलना करके बताया है कि सही और प्रकृति के अनुसार आस्था वही है जो इस्लाम ने प्रस्तुत की है और इस रंग में अन्य धर्मों पर आप अलैहिस्सलाम ने इस्लामी शिक्षा की श्रेष्ठता और प्रधानता सिद्ध की है।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

रब्वाह - 1961 ई.

पुस्तिका मैयारुल मज़ाहिब
स्वाभाविक मापदण्ड से धर्मों की तुलना
और
अंग्रेज़ी सरकार के उपकार की कुछ चर्चा

मेरे विचार में धर्मों को परखने और जांचने तथा खरे-खोटे में अन्तर करने के लिए किसी देश के नागरिकों को इस से उत्तम अवसर प्राप्त होना संभव नहीं जो हमारे देश पंजाब और हिन्दुस्तान को मिला है। इस अवसर की प्राप्ति के लिए पहली कृपा ख़ुदा तआला की ब्रिटिश सरकार का हमारे इस देश पर अधिकार है। हम अत्यन्त कृतघ्न और नेमत के इन्कारी ठहरेंगे यदि हम सच्चे हृदय से इस **उपकारी सरकार** के आभारी न हों, जिसके बरकत वाले अस्तित्व से हमें **दावत** और इस्लाम के **प्रचार** का वह अवसर मिला जो हम से पूर्व किसी बादशाह को भी न मिल सका, क्योंकि इस ज्ञान-प्रिय सरकार ने अभिव्यक्ति की वह **स्वतंत्रता** दी है जिस का उदाहरण यदि किसी अन्य वर्तमान शासन में तलाश करना चाहें तो व्यर्थ है। क्या यह अद्भुत बात नहीं कि हम **लन्दन** के बाज़ारों में **इस्लाम धर्म** की सहायता के लिए वह **उपदेश** कर सकते हैं जिसका विशेष तौर पर श्रेष्ठ मक्का में उपलब्ध होना हमारे लिए असंभव है और इस सरकार ने न केवल पुस्तकों के **प्रकाशन** और धर्म के प्रसारण में प्रत्येक क़ौम को स्वतंत्रता दी अपितु स्वयं भी प्रत्येक फ़िर्क़े को विद्याओं एवं कलाओं के प्रकाशन द्वारा सहायता

दी और शिक्षा एवं प्रशिक्षण से एक संसार की **आंखें** खोल दीं। तो यद्यपि इस उपकारी **सरकार** का यह उपकार भी कुछ कम नहीं कि वह हमारे माल, सम्मान और ख़ून की जहां तक शक्ति है सच्चे दिल से **रक्षा** कर रही है। और हमें इस आज़ादी से लाभ पहुंचा रही है जिसके लिए हम से पहले बहुत से मानव जाति के सच्चे हमदर्द तरसते हुए गुज़र गए परन्तु सरकार का यह दूसरा उपकार उस से भी बढ़ कर है कि वह जंगली वहशियों और नाम के मनुष्यों को भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा के माध्यम से विद्वान एवं बुद्धिमान बनाना चाहती है। हम देखते हैं कि इस सरकार के निरन्तर प्रयासों से वे लोग जो पशु और चौपायों के करीब-करीब थे कुछ-कुछ भाग इन्सानियत, समझ एवं विवेक का ले चुके हैं और अधिकतर हृदयों तथा मस्तिष्कों में एक ऐसी रोशनी पैदा हो गई है जो विद्याओं की प्राप्ति के पश्चात् पैदा हुआ करती है। जानकारियों की विशालता ने जैसे सहसा दुनिया को परिवर्तित कर दिया है, किन्तु जिस प्रकार शीशे में से घर के अन्दर रोशनी तो आ सकती है परन्तु पानी नहीं आ सकता। इसी प्रकार ज्ञान की रोशनी तो हृदयों और मस्तिष्कों में आ गई है परन्तु अभी वह शुद्ध पानी निष्कपटता और सच की ओर होने का अन्दर नहीं आया जिससे **रूह का पौधा** पोषण पाता और अच्छा फल लाता, परन्तु यह सरकार का दोष नहीं है अपितु अभी ऐसे संसाधन समाप्त या बहुत कम हैं जो **सच्ची रूहानियत** को जोश में लाएं। यह अद्‌भुत बात है कि ज्ञान की उन्नति से छल-कपट की भी कुछ उन्नति मालूम होती हे और सत्यनिष्ठ लोगों को असहनशील भ्रमों का सामना है। ईमानी सादगी बहुत घट गई है और

दार्शनिकतापूर्ण विचारों ने जिन के साथ धार्मिक जानकारियां कदम से कदम मिलाकर चलने वाली नहीं हैं नव शिक्षित लोगों पर एक ज़हरीला प्रभाव डाल रखा है जो **नास्तिकता** की ओर खींच रहा है और वास्तव में अत्यन्त कठिन है कि इस प्रभाव से लोग धार्मिक सहायता के बिना बच सकें। उस व्यक्ति की हालत पर अफ़सोस कि जो ऐसे मदरसों और कालेजों में इस हालत में छोड़ा गया है, जबकि उसको धार्मिक **अध्यात्म ज्ञानों** तथा वास्तविकताओं से कुछ भी सूचना नहीं। हां हम कह सकते हैं कि इस उच्च साहसी सरकार ने जो मानव जाति की **हमदर्द** है इस देश के हृदयों की भूमि को जो एक बंजर पड़ा हुआ था अपने हाथ के प्रयासों से जंगली पेड़ों और झाड़ियों तथा विभिन्न प्रकार की घास से जो बहुत ऊंचे और उपलब्ध होकर भूमि को ढंक रहे थे पवित्र कर दिया है और अब प्राकृतिक तौर पर वह समय आ गया है कि सच्चाई का बीज इस भूमि में बोया जाए और फिर आकाशीय **पानी से सिंचाई** हो। तो वे लोग बड़े ही सौभाग्यशाली हैं जो **इस मुबारक** सरकार के माध्यम से आकाशीय वर्षा के निकट पहुंच गए हैं। मुसलमानों को चाहिए कि इस सरकार के अस्तित्व को ख़ुदा तआला की कृपा समझें और इसके सच्चे आज्ञा पालन के लिए ऐसा प्रयास करें कि दूसरों के लिए नमूना हो जाएं। क्या उपकार का बदला उपकार नहीं, क्या नेकी के बदले नेकी करना अनिवार्य नहीं। अतः चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति सोच ले और अपना नेक जौहर दिखाए। इस्लामी **शरीअत** किसी के अधिकार और उपकार को नष्ट करना नहीं चाहती। तो न द्वेषपूर्वक अपितु हृदय की सच्चाई से इस उपकारी सरकार से आज्ञापालन के

साथ व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि हमारे धर्म का प्रकाश फैलाने के लिए प्रथम आयोजन ख़ुदा तआला ने यही स्थापित किया है।

फिर दूसरा **माध्यम जो धर्मों को पहचानने** का हमारे देश में पैदा हो गया। छापेखानों की बहुतात है। क्योंकि ऐसी पुस्तकें जो मानो पृथ्वी में **दफ़्न** थीं इन छापाखानों के माध्यम से जैसे पुनः **जीवित हो गईं**। यहां तक कि हिन्दुओं का **वेद भी नए पन्नों** का लिबास पहन कर निकल आया, नया जन्म लिया और मूर्खों और जनसामान्य की बनाई हुई कहानियों की छिद्रान्वेषण हो गया।

तीसरा माध्यम मार्गों का खुलना और **डाक** का उत्तम प्रबंध और दूर-दूर देशों से पुस्तकों का इस देश में आ जाना और इस देश से उन देशों में जाना ये सब संसाधन **सच की पड़ताल** के हैं जो ख़ुदा की कृपा (फ़ज़्ल) ने हमारे देश में उपलब्ध कर दिए जिन से हम पूरी स्वतंत्रता के साथ लाभ प्राप्त कर रहे हैं। **ये समस्त लाभ** इस उपकारी और नेक नीयत सरकार के द्वारा हमें मिले हैं जिस के लिए सहसा हमारे **दिल से दुआ** निकलती है। परन्तु यदि यह प्रश्न हो कि फिर ऐसी सभ्य और बुद्धिमान सरकार ऐसे धर्म से क्यों संबंध रखती है जिसमें मनुष्य को ख़ुदा बना कर **सच्चे ख़ुदा** के स्पष्ट, अनादि तथा अपरिवर्तनीय प्रताप की मान-हानि की जाती है। तो अफसोस कि इस प्रश्न का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि बादशाहों और राजाओं को जो देश के शासन का विचार आवश्यक सीमा से बढ़ जाता है इसलिए सोच-विचार की समस्त शक्तियां इसी में व्यय हो जाती हैं और राष्ट्रीय सहायता का हित **आख़िरत** (परलोक) के मामलों की ओर सर उठाने नहीं देता। इसी प्रकार एक निरन्तर और न समाप्त

होने वाले सांसारिक उद्देश्यों के नीचे दब कर ख़ुदा को पहचानने और सत्य की अभिलाषा की रूह कम हो जाती है। इसके बावजूद ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल (कृपा) से निराशा नहीं कि वह इस साहसी सरकार को **सद्मार्ग** की ओर ध्यान दिला दे। हमारी दुआ जैसा कि इस सरकार की सांसारिक भलाई के लिए है इसी प्रकार आख़िरत के लिए भी है। तो क्या आश्चर्य है कि दुआ का प्रभाव हम भी देख लें।

इस युग में जबकि सच और झूठ को ज्ञात करने के लिए बहुत से माध्यम पैदा हो गए हैं। हमारे देश में तीन बड़े धर्म आमने-सामने खड़े होकर एक दूसरे से टकरा रहे हैं। इन तीनों धर्मों में से प्रत्येक धर्म वालों का दावा है कि मेरा ही धर्म सच्चा और सही है, और आश्चर्य कि किसी की जीभ भी इस बात के इन्कार की ओर नहीं झुकती कि इसका धर्म सच्चाई के सिद्धान्तों पर आधारित नहीं परन्तु मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि जैसा कि हमारे विरोधियों की जीभों का दावा है ऐसा ही एक सेकण्ड के लिए उनके हृदय भी उनकी जीभों से सहमत हो सकते हैं। सच्चे धर्म की यह एक बड़ी निशानी है कि इस से पूर्व कि हम जो उसकी **सच्चाई** के तर्क वर्णन करें स्वयं व अपने **अस्तित्व** में ही ऐसा प्रकाशमान एवं चमकदार होता है कि यदि दूसरे धर्म उसकी तुलना में परखे जाएं तो वे सब **अंधकार** में पड़े हुए विदित होते हैं और इस तर्क को उस समय एक बुद्धिमान इन्सान सफाई से समझ सकता है कि जबकि प्रत्येक धर्म को उसके बनाए हुए तर्कों को पृथक करके केवल उसके मूल सिद्धान्त पर दृष्टि डालें, अर्थात् उन धर्मों के ख़ुदा को पहचानने के तरीके को केवल एक दूसरे के सामने रख कर

जाचें और किसी धर्म के ख़ुदा को पहचानने की आस्था पर **बाह्य तर्कों** का हाशिया न चढ़ाए, अपितु तर्कों से अलग करके तथा एक धर्म को दूसरे धर्म की तुलना पर रखकर **परखे** और **सोचे** कि किस धर्म में निजी सच्चाई की चमक पाई जाती है और **किसी** में यह **विशिष्टता** है कि केवल उसके ख़दा को पहचानने के तरीक़े पर ही दृष्टि डालना **हृदयों** को अपनी ओर खींचता है उदाहरणतया **तीन धर्म** जिन का मैं अभी वर्णन कर चुका हूं ये हैं :- **आर्य, ईसाई, इस्लाम** यदि हम इन तीनों की असल तस्वीर दिखाना चाहें तो निम्नलिखित विवरण सहित है :-

आर्य धर्म का एक ऐसा ख़ुदा है जिसकी ख़ुदाई का अपनी व्यक्तिगत शक्ति और क़ुदरत पर चलना असंभव है और उसकी समस्त आशाएं ऐसे अस्तित्वों पर लगी हुई हैं जो उसके हाथ से पैदा नहीं हुए। **वास्तविक ख़ुदा** की क़ुदरतों का अन्त मालूम करना मनुष्य का कार्य नहीं परन्तु आर्यों के **परमेश्वर** की क़ुदरत उंगलियों पर गिन सकते हैं। वह एक ऐसा **निम्न शक्ति वाला** परमेश्वर है कि उसकी समस्त क़ुदरतों की सीमा ज्ञात हो चुकी है और यदि उसकी क़ुदरतों की बहुत ही प्रशंसा की जाए तो इस से बढ़कर कुछ नहीं कह सकते कि वह अपने जैसी अनश्वर वस्तुओं को मकान बनाने वाले मिस्त्रियों की तरह जोड़ना जानता है। और यदि यह प्रश्न हो कि अपने घर से कौन सी वस्तु डालता है तो बड़े ही अफसोस से कहना पड़ता है कि **कुछ नहीं**। अतः उसकी शक्ति की अन्तिम श्रेणी केवल इस सीमा तक है कि वर्तमान रूहों और छोटे शरीरों को जो सदैव से उसके अस्तित्व की तरह अनादि और स्वयंभू हैं जिनकी उत्पत्ति

पर उसके अस्तित्व का कुछ भी प्रभाव नहीं परस्पर जोड़ देता है। परन्तु इस बात पर तर्क स्थापित होना कठिन है कि क्यों इन अनश्वर वस्तुओं को ऐसे परमेश्वर की आवश्यकता है, जबकि कुछ वस्तुएं स्वयंभू हैं। इनकी समस्त शक्तियां भी स्वयंभू हैं और उनमें परस्पर मिलने की योग्यता भी स्वयंभू है और उनमें खींचने तथा आकृष्ट करने की शक्ति भी अनादि काल से है और इनकी समस्त विशेषताएं जो जोड़ने के बाद भी प्रकट होती हैं स्वयंभू हैं। तो फिर समझ नहीं आता कि किस तर्क से इस दोषपूर्ण और शक्तिहीन परमेश्वर की आवश्यकता सिद्ध हो जाती है और इसमें तथा इस के अतिरिक्त में अधिक होशियार और बुद्धिमान होने के अतिरिक्त परस्पर और क्या अन्तर हो सकता है। इसमें क्या सन्देह है कि आर्यों का परमेश्वर उन असीमित क़ुदरतों से विफल है जो उलूहियत (परमेश्वर) की खूबी के बारे में हैं और यह उस काल्पनिक परमेश्वर का दुर्भाग्य है कि उसको वह सर्वांगपूर्ण खूबी उपलब्ध न हो सकी जो उलूहियत का पूर्ण **प्रताप** चमकने के लिए आवश्यक है और दूसरा दुर्भाग्य यह है कि ख़ुदा को पहचानने के लिए प्रकृति के नियम की दृष्टि से **वेद के कुछ पृष्ठों** के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं, क्योंकि यदि बात सही है कि **रूहें** और **शरीरों के कण** अपनी समस्त शक्तियों, आकर्षणों, विशेषताओं, बुद्धियों बोधों तथा संवेदनाओं सहित स्वयंभू हैं तो फिर एक सद्बुद्धि इन वस्तुओं के जोड़ने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं समझता। कारण यह कि इस स्थिति में इस प्रश्न का उत्तर देना संभावना से बाहर है कि जो वस्तुएं अपने अस्तित्व में हमेशा से स्वयं ही ख़ुदा हैं और अपने अन्दर वे समस्त

शक्तियां भी रखती हैं जो इनके परस्पर जोड़ने के लिए आवश्यक हैं। तो फिर जिस हालत में इनको अपने अस्तित्व के लिए परमेश्वर की आवश्यकता नहीं हुई और अपनी शक्तियों तथा विशेषताओं में किसी बनाने वाले की मुहताज नहीं ठहरीं। तो फिर क्या कारण है कि इनको परस्पर संबंध के लिए किसी दूसरे जोड़ने वाले की आवश्यकता पड़ गई। हालांकि रूहों के साथ उनकी शक्तियों का जोड़ना और शरीरों के कणों के साथ उनकी शक्तियों का जोड़ना यह भी जोड़ने का एक प्रकार है। तो इससे तो यह सिद्ध हो गया कि इन अनश्वर वस्तुओं को जैसा कि अपने अस्तित्व के लिए किसी स्रष्टा की आवश्यकता नहीं और अपनी शक्तियों के लिए किसी आविष्कारक की आवश्यकता नहीं। ऐसा ही परस्पर जोड़ पैदा होने के लिए किसी कारीगर की आवश्यकता नहीं और यह अत्यन्त मूर्खता होगी कि जब सर्वप्रथम स्वयं अपनी ही जीभ से इन वस्तुओं के बारे में मान लें कि वे अपने अस्तित्व और अपनी शक्तियों और अपने परस्पर जोड़ के लिए दूसरे के मुहताज नहीं तो फिर उसी मुंह से यह भी कहें कि कुछ वस्तुओं के जोड़ने के लिए अवश्य किसी दूसरे की आवश्यकता है। अतः यह तो एक दावा होगा जिसके साथ कोई प्रमाण नहीं। तो इस आस्था की दृष्टि से परमेश्वर का अस्तित्व ही **सिद्ध करना कठिन होगा**। अतः उस मनुष्य से अधिक दुर्भाग्यशाली कोई नहीं जो ऐसे **परमेश्वर** पर भरोसा रखता है जिसको अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए भी शक्ति की कमी के कारण कोई उत्तम साधन उपलब्ध नहीं हो सके। यह तो हिन्दुओं के परमेश्वर में ख़ुदाई की **शक्तियां** हैं और नैतिक

शक्तियों का यह हाल है कि वे मनुष्यों की शक्तियों से भी कुछ गिरी हुई मालूम होती हैं। अतः हम देखते हैं कि एक नेक दिल इन्सान बहुत बार ऐसे दोषियों के दोष क्षमा कर देता है जो विनय एवं प्रार्थना के साथ उससे क्षमा चाहते हैं और प्रायः अपने नफ़्स की कृपा की विशेषता से ऐसे लोगों पर उपकार करता है जिन का कुछ भी अधिकार नहीं होता। परन्तु आर्य लोग अपने परमेश्वर के बारे में यह वर्णन करते हैं कि **वह इन दोनों प्रकार के आचरणों से भी भाग्यहीन** है और इनके नज़दीक प्रत्येक पाप करोड़ों योनियों का कारण है, और जब तक कोई पापी असीमित योनियों में पड़ कर पूर्ण दण्ड न पा ले तब तक मुक्ति का कोई उपाय नहीं और इनकी आस्था की दृष्टि से यह आशा बिल्कुल व्यर्थ है कि मनुष्य का पश्चाताप और शर्मिंदा होना तथा पापों की क्षमा-याचना करना उसके दूसरे जन्म में पड़ने से रोक देगी या सच की ओर लौटना पहले अकारण के कथनों एवं कर्मों के दण्ड से उसे बचा लेगा बल्कि असंख्य योनियों का भुगतना आवश्यक है जो किसी प्रकार टल नहीं सकता तथा कृपा और दानशीलता के तौर पर कुछ देना तो परमेश्वर की **आदत** ही नहीं। जो कुछ इन्सान या जानवर कोई अच्छी हालत रखता है या कोई नेमत पाता है वह किसी पहली योनि का **फल है,** परन्तु अफसोस कि इसके बावजूद कि आर्यों को वेदों के सिद्धान्तों पर अत्यन्त गर्व है परन्तु फिर भी यह वेद की **झूठी शिक्षा** उनकी मानवीय अन्तरात्मा को पराजित नहीं कर सकी और मुझे इन मुलाक़ातों के कारण जो प्रायः इस समुदाय के कुछ लोगों से होती हैं यह बात अनेकों बार अनुभव में आ चुकी है

कि जिस प्रकार नियोग के वर्णन के समय आर्यों को एक **लज्जा** संलग्न हो जाती है, इसी प्रकार वे बहुत ही लज्जित होते हैं जब उन से यह प्रश्न किया जाता है कि परमेश्वर की प्राकृतिक और नैतिक शक्तियां ऐसी सीमित क्यों हो गईं जिनको दण्ड से उसकी ख़ुदाई भी बुद्धि के अनुसार सिद्ध नहीं हो सकती, जिसके कारण भाग्यहीन आर्य **अनादि मुक्ति** पाने से वंचित रहे। अत: हिन्दुओं के परमेश्वर की **वास्तविकता** और मर्म यही है कि वह नैतिक एवं **उपास्य** की शक्तियों में अत्यन्त कमज़ोर और दयनीय है और शायद यही कारण है कि वेदों में परमेश्वर की उपासना छोड़ कर अग्नि और वायु और चन्द्र और सूर्य और जल की उपासना पर बल दिया गया है तथा प्रत्येक दान और कृपा का प्रश्न उन से किया गया है क्योंकि जब परमेश्वर आर्यों को किसी मंज़िल तक नहीं पहुंचा सकता अपितु स्वयं पूर्ण क़ुदरतों से वंचित रह कर निराशा की हालत में जीवन व्यतीत करता है तो फिर दूसरे का उस पर भरोसा करना सर्वथा ग़लती है। हिन्दुओं के परमेश्वर की **पूर्ण चित्र** आंखें के सामने लाने के लिए इतना ही पर्याप्त है जो हम लिख चुके।

अब दूसरा धर्म अर्थात् **ईसाई** शेष है जिसके समर्थक बड़े ज़ोर के साथ अपने ख़ुदा को जिसका नाम उन्होंने **यसू मसीह** रखा हुआ है बड़ी अतिशयोक्ति से **सच्चा ख़ुदा** समझते हैं और ईसाइयों के ख़ुदा का हुलिया यह है कि वह एक इस्राईली आदमी मरयम बिन्त याक़ूब का बेटा है जो 32 वर्ष की आयु पाकर इस मृत्युलोक से गुज़र गया। जब हम सोचते हैं कि वह गिरफ़्तार होने के समय क्योंकर **सारी रात दुआ करके फिर भी अपने मतलब से निराश**

रहा और अपमान के साथ पकड़ा गया और ईसाइयों के कथनानुसार सूली पर खींचा गया और **ईली-ईली** करता मर गया। तो हमारा शरीर सहसा कांप जाता है कि क्या ऐसे इन्सान को जिसकी **दुआ** भी ख़ुदा के दरबार में स्वीकार न हो सकी और अत्यन्त विफलता एवं निराशा से **मारें खाता-खाता** मर गया सामर्थ्यवान ख़ुदा कह सकते हैं ? तनिक उस समय के दृश्य को आंखों के सामने लाओ जबकि यसू मसीह **हवालात** में होकर पैलातूस की अदालत से हीरोदस की ओर भेजा गया। क्या यह **ख़ुदा की शान** है कि हवालात में होकर हाथ में हथकड़ी, पैरों में **जंजीरें** कुछ सिपाहियों की **हिरासत** में चालान होकर **झिड़कियां** खाता हुआ **गलील** की ओर रवाना हुआ और इस अफ़सोस से भरी हालत में एक हवालात से दूसरी हवालात में पहुंचा। पैलातूस ने करामत (चमत्कार) देखने पर छोड़ना चाहा उस समय कोई चमत्कार न दिखा सका विवश होकर पुनः हिरासत में वापस करके यहूदियों के हवाले किया गया और उन्होंने एक पल में उसको मौत के घाट उतार दिया।

अब दर्शकगण स्वयं सोच लें कि क्या असली और वास्तविक ख़ुदा की यही निशानियां हुआ करती हैं ? क्या कोई पवित्र अन्तरात्मा इस बात को स्वीकार कर सकती है कि वह जो पृथ्वी तथा आकाश का स्त्रष्टा और असीमित क़ुदरतों और शक्तियों का **मालिक** है वह अन्त में ऐसा दुर्भाग्यशाली, कमज़ोर और अपमानजनक हालत में हो जाए कि उपद्रवी मनुष्य उसको अपने हाथों में मसल डालें। यदि कोई ऐसे ख़ुदा को **पूजे** और उस पर भरोसा करे तो उसे **अधिकार** है परन्तु सत्य तो यह है कि यदि आर्यों के परमेश्वर के मुकाबले

पर भी ईसाइयों के ख़ुदा को खड़ा करके उसकी शक्ति और कुदरत को तोला जाए तब भी उसके मुकाबले पर यह केवल तुच्छ है। क्योंकि आर्यों का काल्पनिक परमेश्वर यद्यपि पैदा करने की कुछ भी शक्ति नहीं रखता परन्तु कहते हैं कि पैदा की हुई वस्तुओं को किसी सीमा तक जोड़ सकता है। परन्तु ईसाइयों के यसू में तो इतनी भी शक्ति सिद्ध न हुई जिस समय यहूदियों ने सलीब पर खींच कर कहा था कि यदि तू **अब स्वयं को बचाए तो हम तुझ पर ईमान लाएंगे**। तो वह उनके सामने स्वयं को बचा न सका अन्यथा स्वयं को बचाना क्या कुछ बड़ा काम था। केवल अपनी रूह को अपने शरीर के साथ जोड़ना था तो उस कमज़ोर को जोड़ने की शक्ति भी न हुई पीछे से पर्दादारों ने बातें बना लीं कि वह क़ब्र में जीवित हो गया था परन्तु अफ़सोस कि उन्होंने न सोचा कि यहूदियों का तो यह प्रश्न था कि हमारे सामने हमें जीवित होकर दिखा दे। फिर जबकि उनके सामने जीवित न हो सका और न क़ब्र में जीवित होकर उनसे आकर मुलाक़ात की तो यहूदियों के नज़दीक अपितु प्रत्येक अन्वेषक के नज़दीक इस बात का क्या सबूत है कि वास्तव में जीवित हो गया था और जब तक सबूत न हो तब तक यदि मान भी लें कि क़ब्र में लाश गुम हो गई तो इस से जीवित होना सिद्ध नहीं हो सकता अपितु बुद्धि के नज़दीक निश्चित तौर पर यही सिद्ध होगा कि पीछे से कोई चमत्कार दिखाने वाला चुरा कर ले गया होगा। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग गुज़रे हैं कि जिन की क़ौम या मानने वालों की यही आस्था थी कि उन का शव गुम होकर वह शरीर के साथ स्वर्ग में पहुंच गया है तो क्या ईसाई स्वीकार कर

लेंगे कि वास्तव में ऐसा ही हुआ होगा। उदाहरणतया दूर न जाओ। **बाबा नानक साहिब** की घटनाओं पर ही दृष्टि डालो कि 17 लाख सिख सज्जनों की इसी पर सहमति है कि वास्तव में वह मृत्योपरान्त अपने शरीर के साथ स्वर्ग में पहुंच गए और न केवल सहमति अपितु उनकी विश्वसनीय पुस्तकों में जो उसी युग में लिखी गईं यही लिखा हुआ है। अब क्या ईसाई लोग स्वीकार कर सकते हैं कि वास्तव में बाबा नानक साहिब शरीर के साथ स्वर्ग में ही चले गए हैं। अफसोस कि ईसाइयों को दूसरों के लिए तो फ़लसफ़ा याद आ जाता है परन्तु अपने घर की अनुचित बातों से फलसफ़े को छूने भी नहीं देते। यदि ईसाई लोग कुछ इन्साफ़ से काम लेना चाहें तो शीघ्र समझ सकते हैं कि सिक्ख लोगों के तर्क बाबा **नानक** की **लाश गुम होने** और शरीर के साथ स्वर्ग में जाने के बारे में ईसाइयों की झूठी बातों की अपेक्षा बहुत ही सुदृढ़ और ध्यान देने योग्य हैं और निस्सन्देह इंजील के कारणों से अधिक शक्तिशाली हैं क्योंकि प्रथम तो वे घटनाएं उसी समय 'बाला' वाली जनम साखी में लिखी गईं, परन्तु इंजीलें यसू के युग से बहुत वर्ष बाद लिखी गईं। फिर एक अन्य प्राथमिकता बाबा नानक साहिब की घटना को यह है कि यसू की ओर जो यह चमत्कार सम्बद्ध किया गया है तो यह वास्तव में उस लज्जा को छुपाने के उद्देश्य से मालूम होती है जो यहूदियों के सामने हवारियों को उठानी पड़ी। क्योंकि जब यहूदियों ने यसू को सलीब पर खींच का फिर उस से यह **चमत्कार** चाहा कि यदि वह अब जीवित होकर सलीब पर से उतर आए तो हम उस पर ईमान लाएंगे तो उस समय यसू सलीब पर से उतर न सका। तो इस कारण

से यसू के शिष्यों को बहुत ही लज्जा हुई और वे यहूदियों के सामने मुंह दिखाने के योग्य न रहे। इसलिए अवश्य था कि वे लज्जा को छुपाने के लिए कोई ऐसा बहाना करते जिस से सरल स्वभाव लोगों की नज़रों में उस कटाक्ष, उपहास और हंसी से बच जाते। अतः इस बात को बुद्धि स्वीकार करती है कि उन्होंने केवल अपने मुख से लज्जा का कलंक उतारने के उद्देश्य से अवश्य यह बहाना बाज़ी की होगी कि रात के समय जैसा कि उन पर आरोप लगा था यसू की लाश को उसकी क़ब्र से निकाल कर किसी दूसरी क़ब्र में रख दिया होगा और फिर प्रसिद्ध कहावत के अनुसार की ख़्वाजा का गवाह डड्डू कह दिया होगा कि लो जैसा कि तुम विनती करते थे यसू जीवित हो गया परन्तु वह आकाश पर चला गया है परन्तु ये कठिनाइयां बाबा नानक साहिब के निधन पर सिक्ख लोगों के सामने नहीं आईं और न किसी शत्रु ने उन पर यह आरोप लगाया और न ऐसे कपटों के लिए उनको कोई आवश्यकता पड़ी और न जैसा कि यहूदियों ने शोर मचाया था कि लाश चुराई गई है तो ईसाई यसू की बजाए बाबा नानक साहिब के बारे में यह आस्था रखते तो किसी हद तक उचित भी था परन्तु यसू के बारे में तो ऐसा विचार सर्वथा बनावट और जालसाज़ी की **दुर्गन्ध से भरा हुआ है।**

अन्ततः यसू के दुख उठाने और सलीब पर चढ़ाए जाने का अन्तिम बहाना यह वर्णन किया जाता है कि वह ख़ुदा होकर सूली पर इसलिए खींचा गया कि ताकि उसकी **मौत** पापों के लिए कफ़्फ़ारा ठहरे। परन्तु यइ बात भी ईसाइयों की ही बनाई हुई है कि **ख़ुदा भी मरा करता है।** यद्यपि मरने के बाद उसे पुनः जीवित करके अर्श

पर पहुंचा दिया और इस ग़लत भ्रम में आज तक गिरफ़्तार हैं कि वह फिर अदालत करने के लिए दुनिया में आएगा और जो शरीर मरने के पश्चात् उसे दोबारा मिला वही शरीर ख़ुदा की हैसियत में हमेशा उसके साथ रहेगा। परन्तु ईसाइयों का यह साक्षात् ख़ुदा जिस पर उनके कथनानुसार एक बार **मौत भी आ चुकी है** और रक्त, मांस हड्डी और ऊपर-नीचे के सब अंग रखता है। यह हिन्दुओं के उन **अवतारों** से समान है जिन को आजकल आर्य लोग बड़े जोश से छोड़ते जाते हैं केवल अन्तर यह है कि ईसाइयों के ख़ुदा ने तो केवल एक बार जन्म लिया परन्तु हिन्दुओं के ख़ुदा **विष्णु** ने नौ बार दुनिया के पाप दूर करने के लिए अपने लिए जन्म लेने का दाग़ स्वीकार कर लिया। विशेष तौर पर आठवीं बार का जन्म लेने का क़िस्सा बहुत ही रुचिकर वर्णन किया जा सकता है। अत: कहते हैं कि कि जब पृथ्वी दैत्यों की शक्ति से पराजित हो गई तो विष्णु ने आधी रात को **कुंवारी लड़की** के पेट से पैदा होकर अवतार लिया और जो पाप दुनिया में फैले हुए थे उनसे लोगों को छुड़ाया। यह क़िस्सा यद्यपि ईसाइयों के शौक़ के अनुसार है, परन्तु इस बात में हिन्दुओं ने बहुत बुद्धिमत्ता दिखाई कि ईसाइयों की भांति अपने अवतारों को **सूली नहीं दी** और न उनके लानती होने के क़ायल हुए। **पवित्र क़ुर्आन** के कुछ संकेतों से बहुत सफाई के साथ मालूम होता है कि मनुष्य को ख़ुदा बनाने के आविष्कारक पहले आर्यवर्त के ब्राह्मण ही हैं और फिर यही विचार **यूनानियों** ने हिन्दुओं से लिए। अन्तत: इस घृणित आस्था में इन दोनों क़ौमों के **मैल खाने वाले ईसाई बने** और हिन्दुओं को एक अन्य दूर की बात सूझी जो ईसाइयो को नहीं

सूझी और वह यह कि हिन्दू लोग ख़ुदा के अजर-अमर के अनश्वर क़ानून में यह बात सम्मिलित रखते हैं कि जब कभी दुनिया पाप से भर गई तो अन्ततः उनके परमेश्वर को यह उपाय समझ में आया कि स्वयं दुनिया में जन्म लेकर लोगों को मुक्ति दे और ऐसी घटना केवल एक बार नहीं हुई अपितु सदैव आवश्यकता के समयों में होती रही परन्तु यद्यपि ईसाइयों की यह तो आस्था है कि ख़ुदा तआला **अनादि** है और पहले युग की ओर चाहे कैसे ही ऊपर से ऊपर चढ़ते जाएं उस ख़ुदा के अस्तित्व का कहीं प्रारंभ नहीं और अनादि काल से वह स्रष्टा और समस्त **लोकों का प्रतिपालक** भी है। परन्तु वे इस बात के क़ायल नहीं हैं कि वह हमेशा से और असीमित युगों से अपने **प्यारे बेटों** को लोगों के लिए सूली पर चढ़ाता रहा है अपितु कहते हैं कि यह उपाय अभी उसको कुछ थोड़े समय से ही सूझा है और अभी बूढ़े बाप को यह विचार आया है कि बेटे को सूली चढ़ा कर दूसरों को अज़ाब से बचाए। यह तो स्पष्ट है कि इस बात के मानने से कि ख़ुदा अनादि और हमेशा से चला आता है यह दूसरी बात भी साथ ही स्वीकार करनी पड़ती है कि उसकी सृष्टि भी अपनी प्रजाति की अनादि होने की हैसियत हमेशा से ही चली आई है और अनादि विशेषताओं की अनादि चमकारों के कारण से भी कभी एक संसार संभव नास्ति में लुप्त होता चला आया है और कभी दूसरा संसार इसके स्थान पर प्रकट होता रहा है और इस की गणना कोई भी नहीं कर सकता कि ख़ुदा ने कितने संसारों को इस दुनिया से उठा कर उसके स्थान पर दूसरे संसार स्थापित किए। अतः ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यह कह कर कि हमने **आदम** से पहले **जान** को

पैदा किया था। इसी अनश्वर संसार के प्रकार की ओर संकेत किया है परन्तु ईसाइयों ने इस बात को स्पष्ट सबूत के बावजूद कि संसार के प्रकार का अनादि होना आवश्यक है। फिर अब तक कोई ऐसी लिस्ट प्रस्तुत नहीं की जिससे मालूम हो कि इन असीमित संसारों में जो एक-दूसरे से बिल्कुल असंबंधित थे। **कितनी बार ख़ुदा का बेटा सूली पर खींचा गया**। क्योंकि यह तो प्रकट है कि ईसाई धर्म के सिद्धान्त के अनुसार ख़ुदा के बेटे के अतिरिक्त कोई व्यक्ति पाप से खाली नहीं। तो इस स्थिति में तो यह प्रश्न आवश्यक है कि वह सृष्टि जो हमारे इस आदम से भी पहले गुज़र चुकी है जिन का इन बनी आदम के सिलसिले से कुछ संबंध नहीं, उनके पापों की क्षमा की क्या व्यवस्था हुई थी। क्या यही बेटा उनको मुक्ति देने के लिए पहले भी कई बार **फांसी** चढ़ चुका है या वह **कोई दूसरा बेटा था** जो पहले युगों में पहली सृष्टि के लिए सूली पर चढ़ता रहा। जहां तक हम विचार करते हैं हमें तो यह समझ आता है कि यदि सलीब के बिना पापों की क्षमा नहीं तो ईसाइयों के ख़ुदा के असीमित और अनगिनत बेटे होंगे जो समय-समय पर इन लड़ाईयों में काम आए होंगे और प्रत्येक अपने समय पर फांसी चढ़ा होगा। तो ऐसे ख़ुदा से किसी कल्याण की आशा रखना व्यर्थ है जिसके स्वयं अपने ही **नौजवान बच्चे मरते रहे**।

अमृतसर के मुबाहसे में भी हमने यह प्रश्न किया था कि ईसाई यह इक़रार करते हैं कि उन का ख़ुदा किसी को पाप में मारना नहीं चाहता फिर इस स्थिति में उन पर यह आरोप है कि उस ख़ुदा ने उन शैतानों की गन्दी रूहों की मुक्ति के लिए क्या प्रबंध किया जिन

गन्दी रूहों का वर्णन इंजील में मौजूद है★ क्या कोई ऐसा बेटा भी दुनिया में आया जिसने शैतानों के पापों के लिए अपनी जान दी हो या शैतानों को पाप से रोका हो। यदि ऐसा कोई प्रबंध नहीं हुआ तो इस से सिद्ध होता है कि ईसाइयों का ख़ुदा इस बात पर हमेशा प्रसन्न रहा है कि शैतानों को जो ईसाइयों के इक़रार से बनी आदम (लोगों) से भी अधिक हैं हमेशा के नर्क में जला दे। फिर जबकि ऐसे किसी बेटे का निशान नहीं दिया गया तो इस स्थिति में तो ईसाइयों को इक़रार करना पड़ा कि उनके ख़ुदा ने शैतानों को नर्क के लिए ही पैदा किया है अतः बेचारे ईसाई जब से इब्न मरयम को ख़ुदा बना बैठे हैं बड़े-बड़े संकटों में पड़े हुए हैं। कोई ऐसा दिन नहीं होगा कि स्वयं उन्हीं की रूह उनकी इस आस्था को नफ़रत से नहीं देखती होगी। फिर

★**हाशिया :-** इस्लामी शिक्षा से सिद्ध है कि शैतान भी ईमान ले आते हैं। अतः हमारे सरदार तथा मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा शैतान मुसलमान हो गया है। अतः प्रत्येक इन्सान के साथ एक शैतान होता है और पवित्र एवं शुद्ध इन्सान का शैतान ईमान ले आता है परन्तु अफ़सोस कि यसू का शैतान ईमान नहीं ला सका बल्कि उल्टा उसको पथभ्रष्ट करने की चिन्ता में लगा और एक पहाड़ी पर ले गया और दुनिया की दौलतें दिखलाईं और वादा किया कि सज्दा करने पर ये समस्त दौलतें दे दूंगा और शैतान का यह कहना वास्तव में एक बड़ी भविष्यवाणी थी और इस बात की ओर संकेत भी था कि जब ईसाई क़ौम उसको सज्दा करेगी तो दुनिया में समस्त दौलतें उनको दी जाएंगी। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ जिन के पेशवा ने ख़ुदा कहला कर फिर शैतान का अनुकरण किया अर्थात् उसके पीछे हो लिया। उनका शैतान को सज्दा करना क्या दूर था। अतः ईसाइयों की दौलतें वास्तव में उसी सज्दे के कारण हैं जो उन्होंने शैतान को किया और स्पष्ट है कि शैतानी वादे के अनुसार सज्दे के बाद ईसाइयों को दुनिया की दौलतें दी गईं। (इसी से)

एक अन्य संकट उनके सामने यह आ गया है कि उस सलीब दिए गए व्यक्ति का मुख्य कारण अन्वेषण के समय कुछ सिद्ध नहीं होता और उसके सलीब पर खींचे जाने का कोई परिणाम दृढ़ सबूत तक नहीं पहुंचता। क्योंकि दो ही बातें हैं -

(1) **प्रथम** यह कि उस स्वर्गीय बेटे के सलीब पर मरने का मुख्य कारण यह ठहराएं कि ताकि अपने मानने वालों को पाप करने में निडर करे और अपने कफ़्फ़ारे के सहारे से बड़े ज़ोर-शोर से अश्लीलता और पाप तथा प्रत्येक प्रकार का व्यभिचार फैला दे। अतः यह बात तो स्पष्ट तौर भी अनुचित और शैतानी कृत्य है और मेरे विचार में दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं होगा जो इस दुरचारपूर्ण तरीक़े को पसन्द करे और ऐसे किसी धर्म के प्रवर्तक को नेक ठहराए जिसने इस प्रकार से सामान्य लोगों को पाप करने की प्रेरणा दी हो बल्कि अनुभव से मालूम हुआ है कि इस प्रकार का फ़त्वा वही लोग देते हैं जो वास्तव में ईमान और नेक चलन से वंचित रह कर अपने कामवासना संबंधी उद्देश्यों के कारण दूसरों को भी व्यभिचारों के जन्म में डालना चाहते थे और ये लोग वास्तव में उन ज्योतिषियों के समान हैं जो एक सार्वजनिक मार्ग में बैठ कर राह चलते लोगों को फुसलाते और धोखा देते हैं और एक-एक पैसा लेकर बेचारे मूर्खों को बड़े सन्तोषजनक शब्दों में शुभ-सन्देश देते हैं कि शीघ्र ही उनका ऐसा-ऐसा भाग्य खुलने वाला है और एक सच्चे अन्वेषक का रूप धारण करके उनके हाथ के चिन्हों तथा चेहरे की निशानियों को बहुत ध्यान से देखते हैं जैसे वे कुछ निशानों का पता लगा रहे हैं और फिर एक प्रदर्शित करने वाली पुस्तक के पृष्ठों को जो केवल

इसी धोखा देने के लिए आगे रखी होती है उलट-पुलट कर विश्वास दिलाते हैं कि वास्तव में पूछने वाले का एक बड़ा ही किस्म का सितारा चमकने वाला है। संभवतः किसी देश का बादशाह हो जाएगा अन्यथा मिनिस्ट्री तो कहीं नहीं गई और या ये लोग जो किसी को उसकी हमेशा की अपवित्रताओं के बावजूद ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) का पात्र बनाना चाहते हैं उन कीमियागरों के समान हैं जो एक सरल स्वभाव परन्तु धनवान व्यक्ति को देख देख कर भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ बोलकर शिकार करना चाहते हैं और इधर-उधर की बातें करते-करते पहले आने वाले कीमियागरों की निन्दा करना आरंभ कर देते हैं कि झूठे, अकुलीन अकारण उचक्कों के तौर पर लोगों का माल छल से खिसका कर ले जाते हैं और फिर अन्तिम बात को धीरे-धीरे इस सीमा तक पहुंचाते हैं कि सज्जनो मैंने अपनी पचास या साठ वर्ष की आयु में जिसको कीमियागरी का दावेदार देखा झूठा ही पाया। हां मेरे गुरू बैकुंठवासी सच्चे रसायनी थे, करोड़ों रुपए का दान कर गए। मुझे सौभाग्य से बारह वर्ष तक उनकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ और फल पाया। फल पाने का नाम सुन कर एक मूर्ख बोल उठता है कि बाबा जी तब तो आप ने अवश्य रसायन का नुस्खा गुरू जी से सीख लिया होगा। यह बात सुन कर बाबा जी कुछ नाराज़ हो कर त्योरी चढ़ा कर बोलते हैं कि मियां इस बात का नाम न लो। हज़ारों लोग एकत्र हो जाएंगे हम तो लोगों से छुप कर भागते फिरते हैं। तो इन कुछ वाक्यों से ही जाहिल जाल में आ जाते हैं। फिर तो जाल में आए शिकार को ज़िब्ह करने के लिए कोई भी कठिनाई शेष नहीं रहती। एकान्त में राज़ के तौर पर समझाते हैं कि वास्तव में तुम्हारा

ही सौभाग्य हमें हज़ारों कोसों से खींच लाया है और इस बात से हमें स्वयं भी आश्चर्य है कि यह कठोर हृदय तुम्हारे लिए नर्म हो गया। अब जल्दी करो और घर से या मांग कर दस हज़ार के स्वर्ण-आभूषण ले आओ एक ही रात में दस गुना हो जाएगा। परन्तु ख़बरदार किसी को मेरी सूचना न देना। किसी अन्य बहाने से मांग लेना। संक्षिप्त यह कि अन्ततः आभूषण लेकर अपनी राह लेते हैं और वे दीवाने दस गुने की इच्छा करने वाले अपनी जान को रोते रह जाते हैं। यह उस लालच का दण्ड होता है जो प्रकृति के नियम से लापरवाही करके चरम सीमा तक पहुंचाया जाता है, परन्तु मैंने सुना है कि ऐसे ठगों को यह अवश्य ही कहना पड़ता है कि हम से पूर्व जितने भी आए या बाद में आएंगे निस्सन्देह समझो कि वे सब धोखेबाज, बटमार अपवित्र, झूठे और इस नुस्ख़े से अनभिज्ञ हैं, ऐसा ही ईसाइयों की पटरी भी जम नहीं सकती जब तक कि हज़रत आदम[अ.] से लेकर अन्त तक समस्त **पवित्र नबियों** को पापी और व्यभिचारी न बना लें।★

(2) दूसरी बात इस दयनीय बेटे के सलीब पर मरने की यह है कि उसके सूली मिलने का यह मुख्य कारण ठहराया जाए कि उसकी सूली पर ईमान लाने वाले हर एक प्रकार के पाप और व्यभिचारों से **बच** जाएंगे और उनकी कामभावना संबंधी भावनाएं प्रकटन में नहीं आ पाएंगी। परन्तु अफ़सोस कि जैसा कि पहली बात सभ्यता के विरुद्ध

★हाशिया :- ईसाइयों की बुद्धि और समझ पर अफ़सोस है कि उन्होंने अपने यसू को ख़ुदा बना कर उसको कुछ लाभ नहीं पहुंचाया अपितु सत्यनिष्ठों के सामने उसको लज्जित किया। उत्तम था कि उसकी रूह को सवाब (पुण्य) पहुंचाने के लिए दान देते, उसके लिए दुआएं करते ताकि उस के आख़िरत के लिए भलाई होती। मुट्ठी भर धूल को ख़ुदा बनाने में क्या मिलना था। (इसी से)

और स्पष्ट तौर पर ग़लत सिद्ध हुई थी इसी प्रकार यह बात भी स्पष्ट तौर पर ग़लत ही सिद्ध हुई है। क्योंकि यदि मान लिया जाए कि यसू का **कफ़्फ़ारा** मानने में एक ऐसी विशेषता है कि उस पर सच्चा ईमान लाने वाला फ़रिश्ते जैसा आचरण वाला बन जाता है, फिर इसके पश्चात् उसके हृदय में पाप का विचार ही नहीं आता तो समस्त पहले नबियों के बारे में कहना पड़ेगा कि वह यसू की सूली और कफ़्फ़ारे पर ईमान नहीं लाए थे। क्योंकि उन्होंने तो ईसाइयों के कथनानुसार व्यभिचारों में सीमा ही पार कर दी। उनमें से किसी ने मूर्ति-पूजा की और किसी ने निर्दोष का खून किया तथा किसी ने अपनी पुत्रियों से दुष्कर्म किया और विशेष तौर पर यसू के दादा साहिब **दाऊद** ने तो सारे **बुरे** काम किए। एक निर्दोष को अपनी कामवासना के लिए छल से क़त्ल कराया और दलाल औरतों को भेजकर उसकी जोरू को मंगवाया तथा उसको **शराब पिलाई** और उससे **व्यभिचार किया** तथा बहुत सा धन हरामकारी में नष्ट किया और सम्पूर्ण आयु में सौ तक पत्नि रखीं और ईसाइयों के कथनानुसार यह कृत्य भी व्यभिचार में सम्मिलित था और विचित्रतम यह कि **रूहुल क़ुदुस** भी प्रतिदिन उस पर उतरता था और ज़बूर बड़ी तीव्रता से उतर रही थी। परन्तु अफ़सोस कि न तो रूहुलक़ुदुस ने और न यसू के कफ़्फ़ारे पर ईमान लाने ने उसे दुष्कर्मों से रोका और अन्ततः उन्हीं दुष्कर्मों में जान दी। इस से विचित्रतम यह कि यह कफ़्फ़ारा यसू की **दादियों** और **नानियों** को भी व्यभिचार से न बचा सका। हालांकि उनके व्यभिचारों से यसू के गौहर-ए-फ़ितरत (स्वभाव रूपी मोती) पर **दाग़** लगता था और ये दादियां, नानियां केवल एक दो नहीं अपितु तीन हैं। अतः यसू

की एक **बुज़ुर्ग नानी** जो एक प्रकार से दादी भी थी अर्थात् **राहाब** कस्बी, अर्थात् वैश्या थी। देखो यशू अध्याय -2 बाब -1 और दूसरी नानी जो एक प्रकार से दादी भी थी उसका नाम तमर है। यह घरेलू व्यभिचारी औरतों की तरह व्यभिचारी थी। देखो पैदायश अध्याय-38 16 से 30 और एक यसू साहिब की नानी जो एक रिश्ते से दादी भी थी **बिन्त सब्अ** के नाम से प्रसिद्ध है। यह वही विशुद्ध चरित्रवान स्त्री थी जिसने दाऊद के साथ व्यभिचार किया था।* देखो समोईल-2, अध्याय-11, आयत-2

अब स्पष्ट है कि उनकी दादियों और नानियों को यसू के कफ़्फ़ारे की अवश्य सूचना दी गई होगी और उस पर ईमान लाई होंगी। क्योंकि यह तो ईसाइयों का सिद्धान्त है कि पहले नबियों और उनकी उम्मत को भी कफ़्फ़ारे की यही शिक्षा दी गई थी और इसी पर ईमान लाकर उनकी मुक्ति हुई, तो यदि यसू के सलीब पर फांसी दिए जाने का यह प्रभाव समझा जाए कि उसके मस्लूब होने पर ईमान लाकर मनुष्य पाप से बच जाता है तो चाहिए था कि **यसू की दादियां और नानियां व्यभिचारों और दुष्कर्मों से** बचाई जातीं परन्तु जिस हालत में समस्त पैग़म्बर इसके बावजूद कि ईसाइयों के कथनानुसार यसू की

* **नोट :-** हमारे सय्यद-व-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मेरी मां से लेकर हव्वा तक मेरी माताओं के क्रम में कोई स्त्री व्यभिचारिणी और दुष्कर्म करने वाली नहीं और न पुरुष व्यभिचारी और दुष्कर्म करने वाला है। परन्तु ईसाइयों के कथनानुसार उनके ख़ुदा साहिब की पैदायश में तीन व्यभिचारिणी स्त्रियों का ख़ून मिला हुआ है। हालांकि तौरात में जो कुछ व्यभिचारिणी स्त्रियों की सन्तान के बारे में लिखा है वह किसी पर छुपा नहीं। (इसी से)

आत्महत्या पर ईमान लाते थे व्यभिचारों से न बच सके और न यसू की दादियां, नानियां बच सकीं तो इस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो गया कि यह **झूठा कफ़्फ़ारा** किसी को कामवासना संबंधी भावनाओं से बचा नहीं सकता और स्वयं मसीह को भी बचा न सका। देखो वह कैसे शैतान के पीछे★ पीछे-पीछे चल गया। हालांकि उसका जाना उचित न थी और संभवत: यही हरकत (कृत्य) थी जिसके कारण

★हाशिया :- आजकल के यूरोपियन दार्शनिक ईसाई होने के बावजूद इस बात को नहीं मानते कि वास्तव में यसू को शैतान फुसला कर एक पहाड़ी पर ले गया था, क्योंकि वे लोग शैतान के साक्षात् रूप धारण करने को नहीं मानते बल्कि स्वयं शैतान के अस्तित्व से ही इन्कारी हैं। परन्तु वास्तव में इन दार्शनिकों के विचारों के अतिरिक्त एक आरोप तो अवश्य होता है कि यदि शैतान की मित्रता की यह घटना यहूदियों के गुज़रने के स्थानों तथा पहाड़ों में होती तो अवश्य था कि न केवल यसू अपितु कई यहूदी भी उस शैतान को देखते और कुछ सन्देह नहीं कि शैतान साधारण मनुष्यों के समान नहीं होगा अपितु एक अद्भुत एवं विचित्र रूप का प्राणी होगा जो देखने वालों को आश्चर्य में डालता होगा। तो यदि वास्तव में शैतान यसू को जागने की अवस्था में दिखाई दिया था तो चाहिए था कि उसको देख कर हज़ारों यहूदियों इत्यादि वहां एकत्र हो जाते और एक जमावड़ा हो जाता परन्तु ऐसा घटित नहीं हुआ इसलिए यूरोपीय अन्वेषक इसे कोई बाह्य घटना स्वीकार नहीं कर सकते, अपितु वे ऐसे ही निरर्थक विचारों के कारण जिन में से ख़ुदाई का दावा भी है इंजील को दूर से सलाम करते हैं। अत: वर्तमान में एक यूरोपियन विद्वान ने ईसाइयों की पवित्र इंजील के बारे में यह राय व्यक्त की है कि मेरी राय में किसी बुद्धिमान आदमी को इस बात का विश्वास दिलाने को कि इंजील मनुष्य की बनावट अपितु वहशियाना आविष्कार है केवल इतनी ही आवश्यकता है कि वह इंजील को पढ़े। फिर साहिब बहादुर यह कहते हैं कि तुम इंजील को इस प्रकार पढ़ो जैसे

वह ऐसा लज्जित हुआ कि जब एक व्यक्ति ने नेक **कहा** तो उसने रोका कि मुझे क्यों नेक कहता है। वास्तव में ऐसा व्यक्ति जो शैतान के पीछे-पीछे चला गया क्योंकर साहस कर सकता है कि स्वयं को नेक कहे। यह बात निश्चित है कि यसू ने अपने विचार से तथा कुछ अन्य बातों के कारण से भी स्वयं को नेक कहलाने से पृथकता व्यक्त की। परन्तु अफ़सोस कि अब ईसाइयों ने न केवल नेक ठहरा दिया

शेष हाशिया - कि तुम किसी अन्य पुस्तक को पढ़ते हो और उसके बारे में ऐसे विचार करो जैसे कि अन्य पुस्तकों के बारे में करते हो। अपनी आंखों से सम्मान की पट्टी निकाल दो और अपने हृदय से भय के भूत को भगा दो, तथा मस्तिष्क भ्रमों से खाली करो तब पवित्र इंजील को पढ़ो तो तुम को आश्चर्य होगा कि तुमने एक पल के लिए भी इस मूर्खता और अत्याचार के लेखक को बुद्धिमान, नेक और पवित्र समझा था। इसी प्रकार अन्य बहुत से दार्शनिक साइंस के जानने वाले जो इंजील को बहुत ही घृणा से देखते हैं वे उन्हीं अपवित्र शिक्षाओं के कारण नफ़रत करने वाले हो गए* जिन को मानना एक बुद्धिमान के लिए वास्तव में बहुत ही शर्म का स्थान है। उदाहरणतया यह एक झूठा क़िस्सा कि एक पिता है जो अत्यधिक क्रोध में आपे से बाहर होने और लोगों को मारना चाहता है और एक

***नोट :-** ईसाइयों में जितना कोई दर्शनशास्त्र के मीनार पर पहुंचता है उतना ही इंजील और ईसाई धर्म से विमुख हो जाता है, यहां तक कि इन दिनों एक मेम साहिबा ने भी ईसाई आस्था के खण्डन में एक पुस्तक प्रकाशित की है परन्तु इस्लामी दार्शनिकों का हाल इसके विपरीत है। बू अली सीना जो दार्शनिकों के सरदार और अधर्मी तथा नास्तिक करके प्रसिद्ध हैं वह अपनी पुस्तक **इशारात** के अन्त में लिखता है कि यद्यपि शारीरिक हश्र (मृत्योपरान्त क़यामत के दिन मुर्दों को जीवित करके उठाना) पर दर्शनशास्त्रीय तर्क स्थापित नहीं अपितु इसके विपरीत पर स्थापित होते हैं परन्तु चूंकि सच्चे मुख़बिर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है इसलिए हम इस पर ईमान लाते हैं। (इसी से)

अपितु ख़ुदा बना रखा है। अतः कफ़्फ़ारा स्वयं मसीह को भी कुछ लाभ न पहुंचा सका और अभिमान और अहंकार जो समस्त बुराइयों की जड़ है वह तो यसू साहिब के ही भाग में आई हुई प्रतीत होती है। क्योंकि उसने स्वयं ख़ुदा बन कर समस्त नबियों को राहज़न, बटमार और अपवित्र हालत के आदमी ठहराया है। हालांकि यह इक़रार भी उसके कलाम से निकलता है कि वह स्वयं भी नेक नहीं है। परन्तु अफ़सोस कि अहंकार की बाढ़ उसकी सम्पूर्ण हालत को बरबाद कर

शेष हाशिया - पुत्र है जिसने पिता के पागलों जैसे क्रोध को लोगों से इस प्रकार टाल दिया है कि स्वयं सूली पर चढ़ गया। अब बेचारे यूरोपियन अन्वेषक ऐसी बेकार बातों को कैसे मान लें। ऐसा ही ईसाइयों को ये साल स्वाभाव विचार कि ख़ुदा को तीन शरीर में विभाजित कर दिया। एक वह शरीर जो आदमी के रूप में हमेशा रहेगा जिस का नाम ख़ुदा का बेटा है। दूसरे वह शरीर जो कबूतर की तरह हमेशा रहेगा जिसका नाम ख़ुदा का बेटा है। दूसरे वह शरीर जो कबूतर की तरह हमेशा रहेगा जिसका नाम रूहुलक़ुदुस है। तीसरे वह शरीर जिसके दाहिने हाथ बेटा जा बैठा है। अब कोई बुद्धिमान इन तीन शरीरों को क्योंकर स्वीकार करे। परन्तु शैतान के सहचर होने का आरोप यूरोपियन दार्शनिकों के नज़दीक कुछ कम हंसी का कारण नहीं। बहुत प्रयासों के पश्चात् ये तावीलें प्रस्तुत होती है कि यह परिस्थितियां यसू की मानसिक शक्तियों के अपने ही विचार थे और इस बात को भी मानते हैं कि तन्दुरुस्ती और स्वास्थ्य की हालत में ऐसे घृणित विचार पैदा नहीं हो सकते। बहुतों को इस बात का व्यक्तिगत अन्वेषण है कि **मिर्गी** के रोग में ग्रस्त अधिकतर शैतानों को इसी प्रकार देखा करते हैं वे बिल्कुल ऐसा ही वर्णन किया करते हैं कि हमें शैतान अमुक-अमुक स्थान पर ले गया और ये-ये चमत्कार दिखाए। मुझे याद है कि शायद चौंतीस वर्ष का समय हुआ होगा कि मैंने स्वप्न में देखा एक स्थान पर शैतान काले रंग और कुरूप खड़ा है। पहले उसने मेरी ओर ध्यान दिया और मैंने उसके

गई है। कोई भला आदमी पहले बुज़ुर्गों की निन्दा नहीं करता परन्तु उसने पवित्र नबियों को बटमारों के नाम से नामित किया है। उसकी जीभ पर दूसरों के लिए हर समय बेईमान, व्यभिचारी का शब्द चढ़ा हुआ है। किसी के बारे में सम्मान का शब्द प्रयोग नहीं किया। क्यों न हो **ख़ुदा का बेटा जो हुआ।** और फिर जब देखते हैं कि यसू के कफ़्फ़ारे ने हवारियों के दिलों पर क्या प्रभाव किया। क्या वे उस पर ईमान लाकर पाप से रुक गए। तो इस स्थान पर भी सच्ची पवित्रता

शेष हाशिया - मुंह पर थप्पड़ मार कर कहा कि दूर हो हे शैतान तेरा मुझे से हिस्सा नहीं। और फिर वह एक दूसरे की ओर गया और उसे अपने साथ कर लिया और जिसको साथ कर लिया उसको मैं जानता था। इतने में आंख खुल गई। उसी दिन या उसके बाद उस व्यक्ति को मिर्गी पड़ी जिसको मैंने स्वप्न में देखा था कि शैतान ने उसको साथ कर लिया था। और मिर्गी के रोग में गिरफ्तार हो गया। इससे मुझे विश्वास हुआ कि शैतान के सहचर होने का स्वप्नफल मिर्गी है। तो यह बहुत ही बारीक नुक्त: और बहुत स्पष्ट तथा बुद्धिमत्तापूर्ण राय है कि यसू वास्तव में मिर्गी के रोग से ग्रस्त था तथा इसी कारण ऐसे स्वप्न भी देखा करता था। और यहूदियों का यह आरोप कि तू "बआल ज़बोल" की सहायता से ऐसे काम करता है। इस राय का समर्थक और बहुत सन्तोषजनक है। क्योंकि बअल ज़बूल भी शैतान का नाम है और यहूदियों की बात इस कारण से भी सही और उचित मालूम होती है कि जिन लोगों को शैतान का सख़्त आसेब हो जाता है और शैतान जिन से प्रेम करने लग जाता है तो यद्यपि उनकी अपनी मिर्गी इत्यादि अच्छी नहीं होती परन्तु दूसरों का अच्छा कर सकते हैं क्योंकि शैतान उनसे प्रेम करता है और उन से अलग होना नहीं चाहता परन्तु अत्यन्त प्रेम के कारण उनकी बातें मान लेता है और दूसरों को उनके लिए शैतानी रोगों से मुक्ति देता है तथा ऐसे आमिल हमेशा शराब और गन्दी चीज़ें इस्तेमाल करते रहते हैं और प्रथम श्रेणी के शराबी और खाने-पीने वाले होते

का ख़ाना रिक्त ही मालूम होता है। यह तो स्पष्ट है कि वे लोग सूली मिलने की ख़बर को सुन कर ईमान ला चुके थे परन्तु फिर भी परिणाम यह हुआ कि यसू की गिरफ़्तारी पर पतरस ने सामने खड़े

शेष हाशिया - हैं। अतः थोड़ा समय गुज़रा है कि एक व्यक्ति इसी प्रकार बेहोशी के रोग में ग्रस्थ था। कहते हैं कि वह दूसरे लोगों के जिन्नों को निकाल दिया करता था। अतः यसू की यह घटना शैतान के सहचर होने का रोग मिर्गी पर स्पष्ट प्रमाण है और हमारे पास कई कारण हैं जिनको विस्तार से लिखने की अभी आवश्यकता नहीं और विश्वास है कि ईसाई अन्वेषक जो पहले ही हमारी इस राय से सहमति रखते हैं इन्कार नहीं करेंगे और जो मूर्ख पादरी इन्कार करें तो उनको इस बात का सबूत देना चाहिए कि यसू का शैतान के साथ जाना वास्तव में जागने की अवस्था की एक घटना है।* और मिर्गी इत्यादि के संलग्न होने का परिणाम नहीं परन्तु सबूत में विश्वसनीय गवाह प्रस्तुत करने चाहिएं जो देखने की गवाही देते हों और मालूम होता है कि कबूतर का उतरना और यह कहना कि तू मेरा प्यारा बेटा है वास्तव में यह भी मिर्गी का एक दौरा था जिसके साथ ऐसे विचार पैदा हुए। बात यह है कि कबूतर का रंग सफेद होता है और बलग़म का रंग भी सफेद होता है और मिर्गी का माद्दः (तत्त्व) बलग़म ही होता है। तो बलग़म कबूतर की शक्ल पर दिखाई दे गया। और यह जो कहा कि तू मेरा बेटा है इसमें भेद यह है कि वास्तव में मिर्गी में ग्रस्त रोगी मिर्गी का बेटा ही होता है। इसीलिए मिर्गी को तिब्ब की कला में उम्मुस्सिब्यान कहते हैं अर्थात् बच्चों की मां। और एक बार यसू के चारों भाइयों ने उस समय सरकार में प्रार्थना-पत्र भी दिया था कि यह व्यक्ति दीवाना हो गया है इसका कोई प्रबंध किया जाए अर्थात् अदालत के जेलखाना में दाख़िल किया जाए ताकि वहां के कानून के अनुसार उसका इलाज हो। तो यह प्रार्थना-पत्र भी इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि यसू वास्तव में मिर्गी के रोग के कारण दीवाना हो गया था। (इसी से)

---

* प्रश्न यह है कि शैतान को यसू के साथ किस-किस ने देखा।

होकर उस पर लानत भेजी, शेष सब भाग गए और किसी के दिल में आस्था का प्रकाश शेष न रहा। तत्पश्चात् पाप से रुकने का अब तक यह हाल है कि विशेष तौर पर यूरोप के अन्वेषकों के इक़रारों से यह बात सिद्ध है कि यूरोप में व्यभिचार का इतना ज़ोर है कि विशेष तौर पर लन्दन में हर वर्ष हज़ारों हरामी बच्चे पैदा होते हैं और इतनी गन्दी घटनाएं यूरोप की प्रकाशित हुई हैं कि कहने और सुनने के योग्य नहीं। **मदिरापान** का इतना ज़ोर है कि यदि इन दूकानों को एक सरल रेखा में परस्पर रख दिया जाए तो शायद एक मुसाफ़िर के दो मंज़िल तय करने तक भी वे दूकानें समाप्त न हों। इबादतों से निवृत्ति है और दिन-रात अय्याशी और संसार परस्ती के अतिरिक्त काम नहीं। तो इस सम्पूर्ण अन्वेषण से सिद्ध हुआ कि यसू के सलीब दिए जाने से उस पर ईमान लाने वाले पाप से रुक नहीं सके * अपितु जैसा कि बांध टूटने से एक तीव्र धार दरिया का पानी आस-पास के देहात को तबाह कर जाता है ऐसा ही कफ़्फ़ारे पर ईमान लाने वालों का हाल हो रहा है और मैं जानता हूं कि ईसाई लोग इस पर अधिक बहस नहीं करेंगे क्योंकि जिस हालत में उन नबियों को जिन के पास ख़ुदा का फ़रिश्ता आता था यसू का कफ़्फ़ारा बुराइयों से रोक न सका। तो फिर व्यापारियों, रोज़गार वालों, और ख़ुश्क पादरियों को अपवित्र

* **नोट :-** यसू का सलीब पर मरना यदि अपनी इच्छा से होता तो आत्महत्या और हराम की मौत थी और इच्छा के विरुद्ध हालत में कफ़्फ़ारा नहीं हो सकता तथा यसू इसलिए स्वयं को नेक नहीं लिख सका कि लोग जानते थे कि यह व्यक्ति शराबी, कबाबी है और यह ख़राब-चाल-चलन न ख़ुदाई के बाद अपितु प्रारंभ ही से ऐसा मालूम होता है। अत: ख़ुदाई का दावा शराब पीने का एक दुष्परिणाम है। (इसी से)

कार्यों से क्योंकर रोक सकता है। तो ईसाइयों के ख़ुदा की हालत यह है जो हम वर्णन कर चुके।

तीसरा धर्म उन दो धर्मों की तुलना में जिन का अभी हम वर्णन कर चुके हैं **इस्लाम** है। इस धर्म का ख़ुदा को पहचानना बहुत ही स्पष्ट और मानवीय प्रकृति के अनुसार है। यदि समस्त धर्मों की पुस्तकें मिट कर उनके समस्त शिक्षा संबंध विचार और कल्पनाएं भी मिट जाएं तब भी वह ख़ुदा जिसकी ओर क़ुर्आन मार्ग-दर्शन करता है, प्रकृति के **नियम के दर्पण** में साफ़-साफ़ दिखाई देगा और उसकी क़ुदरत और दूरदर्शिता से भरा हुआ रूप प्रत्येक कण में चमकता हुआ दिखाई देगा। तो वह ख़ुदा जिस का पता पवित्र क़ुर्आन बताता है अपनी मौजूद वस्तुओं पर केवल प्रकोपी हुकूमत नहीं रखता अपितु पवित्र आयत

(अलआराफ़ - 173) اَلَسۡتُ بِرَبِّکُمۡ قَالُوۡا بَلٰی

के अनुसार प्रत्येक कण-कण अपनी तबियत और रूहानियत से उसके आदेश का पालन करता है। उसकी ओर झुकने के लिए प्रत्येक तबियत में एक आकर्षण पाया जाता है। इस आकर्षण से एक कण भी रिक्त नहीं। और यह इस बात का एक बड़ा तर्क है कि वह प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा है क्योंकि हृदय का प्रकाश इस बात को मानता है कि वह आकर्षण जो उसकी ओर झुकने के लिए समस्त वस्तुओं में पाया जाता है वह निस्सन्देह उसी की ओर से है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन ने इस आयत में इसी बात की ओर संकेत किया है कि

(बनी इस्राईल - 45) اِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمۡدِہٖ

अर्थात् प्रत्येक वस्तु उसकी पवित्रता और उसकी स्तुति वर्णन

कर रही है। यदि ख़ुदा इन वस्तुओं का स्रष्टा नहीं था तो उन वस्तुओं में ख़ुदा की ओर आकर्षण क्यों पाया जाता है। एक विचार करने वाला मनुष्य इस बात को अवश्य स्वीकार कर लेगा कि किसी गुप्त संबंध के कारण यह आकर्षण है। तो यदि वह संबंध ख़ुदा का स्रष्टा होना नहीं तो कोई आर्य इत्यादि इस बात का उत्तर दें कि इस संबंध की वेद इत्यादि में क्या वास्तविकता लिखी है और उसका क्या नाम है। क्या यही सच है कि ख़ुदा केवल ज़बरदस्ती प्रत्येक वस्तु पर शासन कर रहा है और इन वस्तुओं में कोई स्वाभाविक शक्ति और शौक़ ख़ुदा तआला की ओर झुकने का नहीं है। ख़ुदा की पनाह ऐसा कदापि नहीं। अपितु ऐसा विचार करना न केवल मूर्खता अपितु परले दर्जे की बुराई भी है। परन्तु अफ़सोस कि आर्यों के वेद ने ख़ुदा तआला के स्रष्टा होने से इन्कार करके उस रूहानी संबंध को स्वीकार नहीं किया जिस पर स्वाभाविक आज्ञापालन प्रत्येक वस्तु का निर्भर है और चूंकि बारीक मारिफ़त और बारीक ज्ञान से वे हज़ारों कोस दूर थे। इसलिए यह सच्चा दर्शन उन से छुपा रहा है अवश्य समस्त शरीरों और रूहों को उस अनादि अस्तित्व से एक स्वाभाविक संबंध पड़ा हुआ है और ख़ुदा का शासन केवल बनावट और ज़बरदस्ती का शासन नहीं अपितु प्रत्येक वस्तु अपनी रूह से उसको सज्दा कर रही है। क्योंकि कण-कण उसके असीमित उपकारों में डूबा हुआ तथा उसके हाथ से निकला हुआ है। परन्तु अफ़सोस कि समस्त विरोधी धर्म वालों ने ख़ुदा तआला की क़ुदरत, रहमत और पवित्रता के विशाल दरिया को अपनी अनुदारता के कारण बलात् रोकना चाहा है और इन्हीं कारणों से उनके **काल्पनिक ख़ुदाओं** पर कमज़ोरी, अपवित्रता, बनावट,

अनुचित प्रकोप तथा अनुचित शासन के भिन्न-भिन्न प्रकार के दाग़ लग गए हैं। परन्तु इस्लाम ने ख़ुदा तआला की पूर्णतम विशेषताओं की तीव्र बहने वाली धारों को कहीं नहीं रोका। वह आर्यों की तरह इस आस्था की शिक्षा नहीं देता कि पृथ्वी और आकाश की रूहें और शरीरों के कण अपने-अपने अस्तित्व के स्वयं ही **ख़ुदा हैं** और जिस का परमेश्वर नाम है वह किसी अज्ञात कारण से केवल एक राजा के तौर पर उन पर शासक है और न ईसाई धर्म की तरह यह सिखाता है कि ख़ुदा ने एक मनुष्य की तरह एक **औरत** के **पेट से** जन्म लिया और न केवल नौ महीने तक माहवारी का खून खाकर एक पापी शरीर से जो **बिन्ते सबअ** और **तमर** तथा राहाब जैसी व्यभिचारिणी स्त्रियों के ख़मीर से अपनी प्रकृति में **इब्नियत** (पुत्र होने का) हिस्सा रखता था। खून, हड्डी और मांस को प्राप्त किसा अपितु बचपन के समय में जो-जो रोगों के कष्ट हैं जैसे ख़सरा, चेचक, दांतों के कष्ट इत्यादि वे सब सहन किए और आयु का बहुत सा भाग साधारण मनुष्यों की भांति खोकर अन्त में मृत्यु के निकट पहुंच कर ख़ुदा याद आ गई। परन्तु चूंकि केवल दावा ही दावा था और ख़ुदाई शक्तियां साथ नहीं थीं। इसलिए दावे के साथ ही पकड़ा गया। अपितु इन समस्त हानियों और अपवित्र हालतों से प्रतापवान वास्तविक ख़ुदा को पवित्र और पावन समझता है और उस वहशियाना क्रोध से भी उसके अस्तित्व को श्रेष्ठतर ठहराता है कि जब तक किसी के गले में फांसी का रस्सा न डाले तब तक अपने बन्दों को क्षमा करने के लिए कोई उपाय उसे याद न आए। और ख़ुदा तआला के अस्तित्व और विशेषताओं के बारे में पवित्र क़ुर्आन यह सच्ची, पवित्र और पूर्ण

मारिफ़त सिखाता है कि उसकी क़ुदरत और रहमत (दया), श्रेष्ठता और पवित्रता असीम है और यह कहना, क़ुर्आनी शिक्षा के अनुसार बहुत ही घृणित पाप है कि ख़ुदा तआला की क़ुदरतें, श्रेष्ठताएं और रहमतें एक सीमा पर जाकर ठहर जाती हैं या किसी अवसर पर पहुंच कर उसकी कमज़ोरी उसका बाधक हो जाता है अपितु उसकी समस्त क़ुदरतें इस सुदृढ़ नियम पर चल रही हैं कि उन मामलों को छोड़कर जो उसकी पवित्रता, खूबी और पूर्ण विशेषताओं के विपरीत हैं या उसके अपरिवर्तनीय अज़ाब के वादे के विपरीत हैं शेष जो चाहता है कर सकता है। उदाहरणतया यह नहीं कह सकते कि वह अपनी पूर्ण क़ुदरत से स्वयं को मार सकता है। क्योंकि यह बात उसकी अनादि विशेषता हमेशा जीवित रहने और क़ायम रहने के विरुद्ध है। कारण यह कि वह पहले ही अपनी करनी और कथनी में प्रकट कर चुका है कि वह अजर-अमर और अनश्वर है और मृत्यु उस पर वैध नहीं। ऐसा ही यह भी नहीं कह सकते कि वह किसी स्त्री के गर्भाशय में प्रवेश करता, माहवारी का खून खाता और लगभग नौ माह पूर्ण करके सेर डेढ़ सेर के भार पर स्त्रियों के मूत्र के मार्ग से रोता-चिल्लाता पैदा हो जाता है, रोटी खाता, शौच जाता, पेशाब करता और इस नश्वर जीवन के समस्त दु:ख उठाता है और अन्ततः कुछ समय जान निकल ने का अज़ाब सहन करके इस नश्वर संसार से कूच कर जाता है। क्योंकि ये समस्त मामले हीन और क्षति में सम्मिलित हैं और उसके अनादि प्रताप तथा पूर्ण कमाल (ख़ूबी) के विरुद्ध हैं।

फिर भी यह जानना चाहिए कि चूंकि इस्लामी आस्था में वास्तव में ख़ुदा तआला सम्पूर्ण सृष्टियों का पैदा करने वाला है और क्या रूहें

तथा क्या शरीर सब उसी के पैदा किए हुए हैं और उसी की क़ुदरत से प्रकटनशील हुए हैं इसलिए क़ुर्आनी आस्था यह भी है कि जैसा कि ख़ुदा तआला प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा और पैदा करने वाला है। इसी प्रकार वह प्रत्येक वस्तु का वास्तविक तौर पर **क़य्यूम** (सर्वदा स्थापित रहने तथा दूसरों को रखने वाला - अनुवादक) भी है। अर्थात् प्रत्येक वस्तु का उसी के अस्तित्व के साथ जीवन है और उसका अस्तित्व प्रत्येक वस्तु के लिए प्राण के स्थान पर है और यदि उसका नास्ति होना मान लें तो साथ ही प्रत्येक वस्तु का नास्ति होगा। अतः प्रत्येक अस्तित्व की सुरक्षा और स्थापना के लिए उसका साथ अनिवार्य है। परन्तु आर्यों और ईसाइयों का यह विश्वास नहीं है। आर्यों का इसलिए कि वह ख़ुदा तआला को रूहों और शरीरों का स्रष्टा नही जानते और प्रत्येक वस्तु से ऐसा उसका संबंध नहीं मानते। जिस से सिद्ध हो कि प्रत्येक वस्तु उसी की क़ुदरत और इरादे का परिणाम है और उसकी इच्छा के लिए साए के तौर पर है अपितु प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व इस प्रकार से स्थायी समझते हैं जिस से समझा जाता है कि उनके विचार में समस्त वस्तुएं अपने अस्तित्व में स्थायी तौर पर अनादि हैं। तो जबकि ये समस्त मौजूद वस्तुएं उनके विचार में ख़ुदा तआला की क़ुदरत से निकल कर क़ुदरत के साथ स्थापित नहीं तो निस्सन्देह ये सब वस्तुएं हिन्दुओं के परमेश्वर से ऐसी असंबंधित हैं कि यदि इनके परमेश्वर का मरना भी मान लें तब भी रूहों और शरीरों की कुछ भी हानि नहीं। क्योंकि उनका परमेश्वर केवल भवन निर्माता की भांति है और जिस प्रकार ईंट तथा गारा भवन-निर्माता की व्यक्तिगत क़ुदरत के साथ स्थापित नहीं ताकि प्रत्येक परिस्थिति में उसके अस्तित्व

के अधीन हो। यही हाल हिन्दुओं के परमेश्वर की वस्तुओं का है। अत: जैसा कि भवन-निर्माता के मर जाने से आवश्यक नहीं होता कि उसने अपनी आयु में जितनी इमारतें बनाई हों वे साथ ही गिर जाएं। ऐसा ही यह भी अवश्य नहीं कि हिन्दुओं के परमेश्वर के मर जाने से कुछ भी आघात अन्य वस्तुओं को पहुंचे। क्योंकि वह उनका **क़य्यूम** ※ (स्थापित रहने वाला) नहीं। यदि **क़य्यूम** होता तो अवश्य उनका स्रष्टा भी होता। क्योंकि जो वस्तुएं पैदा होने में ख़ुदा की शक्ति की मुहताज नहीं। वह क़ायम रहने में भी शक्ति की मुहताज नहीं। वह क़ायम रहने में भी उसकी शक्ति के सहारे की आवश्यकता नहीं रखतीं और ईसाइयों की आस्था की दृष्टि से भी उनका साक्षात् रूप में ख़ुदा वस्तुओं का स्थापित करने वाला नहीं हो सकता। क्योंकि **क़य्यूम** होने के लिए साथ होना आवश्यक है। स्पष्ट है कि ईसाइयों का ख़ुदा यसू अब पृथ्वी पर नहीं, क्योंकि यदि पृथ्वी पर होता तो अवश्य लोगों को दिखाई देता। जैसा कि उस युग में दिखाई देता था। जबकि पैलातूस के काल में उसके देश में मौजूद था। तो जबकि वह पृथ्वी पर मौजूद नहीं था पृथ्वी के लोगों का **क़य्यूम** क्योंकर हुआ। रहा आकाश, तो वह आकाशों का भी **क़य्यूम** नहीं। क्योंकि उसका शरीर तो केवल छ: सात बालिश्त के लगभग होगा। फिर वह समस्त आकाशों पर क्योंकर मौजूद हो सकता है ताकि उनका **क़य्यूम** हो। किन्तु हम लोग जो ख़ुदा तआला को अर्श का रब्ब कहते हैं तो इस से यह मतलब नहीं कि वह शारीरिक एवं शरीर है और अर्श का

※ जो वस्तु क़ुदरत के सहारे से पैदा नहीं हुई वह अपनी रक्षा में भी क़ुदरत के सहारे की मुहताज नहीं।

मुहताज है अपितु अर्श से अभिप्राय वह पवित्र बुलन्दी का स्थान है जो इस लोक और परलोक से बराबर संबंध रखती है और ख़ुदा तआला को अर्श पर कहना वास्तव में इन मायनों से पर्याय है कि वह दोनों लोकों का मालिक है और जैसा कि एक व्यक्ति ऊंचे स्थान पर बैठ कर या किसी अत्यन्त ऊंचे महल पर चढ़कर दाएं-बाएं दृष्टि रखता है। ऐसा ही रूप के के तौर पर ख़ुदा तआला बुलन्द से बुलन्द तख़्त पर स्वीकार किया गया है जिस की दृष्टि से कोई वस्तु छुपी हुई नहीं, न इस लोक की और न उस दूसरे लोक की हां इस स्थान को सामान्य समझों के लिए ऊपर की ओर वर्णन किया जाता है। क्योंकि जबकि ख़ुदा तआला वास्तव में सबसे ऊपर है और प्रत्येक वस्तु उसके पैरों पर गिरी हुई है। तो ऊपर की ओर से उसके अस्तित्व को अनुकूलता है परन्तु ऊपर की ओर वही है जिस के नीचे दोनों लोक हैं और वह एक अन्तिम बिन्दु की भांति है जिसके नीचे से दो महान लोकों की दो शाखाएं निकलती हैं और प्रत्येक शाखा हज़ारों लोकों पर आधारित है जिन का ज्ञान उस अस्तित्व के अतिरिक्त किसी को नहीं जो इस अन्तिम बिन्दु पर खड़ा है जिस का नाम अर्श है। इसलिए प्रत्यक्ष तौर पर भी वह उच्च से उच्चतम बुलन्दी जो ऊपर की दिशा में उस अन्तिम बिन्दु में समझी जाए जो दोनों लोकों के ऊपर है वही अर्श के नाम से शरीअत के नज़दीक नामित है। और यह बुलन्दी ख़ुदा तआला के की निजी व्यापकता की दृष्टि से है ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि वह उद्‌गम है प्रत्येक वरदान का और लौटने का स्थान है प्रत्येक वस्तु का और प्रत्येक सृष्टि का मस्जूद (उपास्य) है और सब से ऊंचा है अपने अस्तित्व में और विशेषताओं में तथा

ख़ूबियों में। अन्यथा क़ुर्आन फ़रमाता है कि हर एक जगह है। जैसा कि फ़रमाया -

اَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ

(अलबक़रह - 116)

जिधर मुंह फेरो उधर ही ख़ुदा का मुंह है और फ़रमाता है

(अलहदीद - 5) هُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ

अर्थात् जहां तुम हो वह तुम्हारे साथ है और फ़रमाता है

(क़ाफ़ - 17) نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ

अर्थात् हम मनुष्य से उसकी मुख्य धमनी से भी अधिक निकट हैं। यह तीनों शिक्षाओं का नमूना है।

والسلام علی من اتّبع الهُدٰی

समाप्त